Paper II

Date

हिन्दी आलोचना (लघुप्रश्नोत्तर भाग-2)

(4) प्रश्न:- मनोविश्लेषणवादी आलोचना का क्या अभिप्राय है?

उत्तर → मनोविश्लेषणवादी आलोचना का अभिप्राय है (मनोविश्लेषण) मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में किसी कृति की समीक्षा करना। फ्रायड के अनुसार कला का जन्म वासना से होता है। हमारी कुण्ठाएं और अतृप्त वासनाएँ जो अवचेतन में पड़ी रहती हैं जाने अनजाने कला या स्वप्न के माध्यम से व्यक्त हो जाती हैं अतः हमें किसी साहित्यिक कृतिकार के अन्तरमन और स्वभाव का मनोविश्लेषण करना चाहिए। यह आलोचना पद्धति साहित्य को सामाजिक कर्म न मानकर वैयक्तिक कर्म मानती है और कवि के आन्तरिक व्यक्तित्व के सम्बन्ध में कृति का विश्लेषण और मूल्यांकन करती है। मनोवैज्ञानिक आलोचना में मनोविश्लेषण के आधार पर रचना की केवल परीक्षा नहीं होती अपितु रचनाकार की मानसिक स्थितियों का विश्लेषण और उसके व्यक्तित्व का अध्ययन भी होता है।

(5) प्रश्न:- प्रभाववादी आलोचना क्या है?

उत्तर → जब कोई आलोचक किसी कृति को पढ़कर अपने मन पर पड़ी प्रभाव तरंगों को व्यक्त करता है तब उसे प्रभाववादी आलोचना कहा जाता है। इस आलोचना की पद्धति में आलोचना कृति का विश्लेषण या विवेचन नहीं करता। आलोचक अपने हृदय पर पड़े हुए प्रभावों से बच ही नहीं सकता अतः तटस्थ होकर आलोचना करना यदि असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। हडसन प्रभाववादी आलोचना को विशेष महत्व देता हुआ कहता है —

Date

वास्तव में हम किसी कृति के संबंध में अपने विचार ही व्यक्त करते हैं अर्थात् अपने मन पर पड़े प्रभावों को ही सामने रखते हैं।" ~~दोष यह है~~ प्रभाववादी आलोचना में सबसे बड़ा दोष यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी रुचि भिन्नता के कारण एक ही रचना के बारे में अलग-अलग राय व्यक्त करता है इसलिए आलोचना में प्रमाणिकता नहीं रहती।

प्रश्न ⑥ डा० राम विलास शर्मा की पाँच प्रगतिवादी समीक्षाकृतियों का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर - डा० राम विलास शर्मा की पाँच प्रगतिवादी समीक्षा कृतियाँ हैं —

1. प्रगति और परंपरा
2. प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ
3. मार्क्सवाद और प्राचीन साहित्य का मूल्यांकन
4. भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद
5. मार्क्स और पिछड़े हुए समाज